"परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट।"

* भूमिका
* परंपरा : भारत की संस्कार का झलक।
* इस आधुनिक समाज में परंपरा के नाम पर होनेवाला संघर्ष।
* क्या चुने हम ? आधुनिकता या परंपरा।
* समाज की भलाई ; हमारा सबसे बड़ा धर्म।
* उपसंहार

* **भूमिका**

"हमारे विश्वासों से बना है सारे परंपरा और आचार
जिसकी नीव है मानव की धार्मिक विचार"

हमारी परंपरा, भारत के संस्कार से जुड़ा है। लोगों के धर्म और विश्वासों से ही यह परंपरा बना है। जब मानव प्राचीन काल में जंगलों में

भटकते थे, तो प्रकृति में होनेवाले बदलाव उनकी मन में नई सोच और क्रियात्मकता को जगा दिया था। तब से मानव ने नए आचार और विश्वासों का पालन करना शुरु कर दिया और जैसे-जैसे हमारी संस्कार की प्रगति होता गया, वैसे ही इन परंपरा का स्थान मानव के जीवन में बढ़ता गया। हमारी बुजुर्गों ने जो परंपरा हमें दिया वह आज भी हम अपने जिंदगी में बहुत महत्वपूर्ण समझते हैं।

लेकिन बदलाव तो समाज का नियम है। जैसे समय बदलता है, वैसे समाज भी बदलता है। आज हम इक्किसवि सदी में जी रहे हैं, जहा हमारे सामने आधुनिकता के दरवाजे खुल गए हैं। हमारी व्यवहार और सोच आधुनिक बन रहा है और शायद इसीलिए ही आज के ज़माने में आधुनिकता और परंपरा के बीच टकराहट हो रहा है क्यों कि लोगों की आधुनिक सोच हमारे कुछ परंपराओं को स्वीकार

करने के लिए तैयार ही नही है।

परंपरा ; भारत की संस्कार का झलक।

आज जिन परंपराओं को हम मानते है उनसे ही हमारी भारत की संस्कार दिखती है। हमारी भारत की तरह ऐसा एक देश है ही नही जहा इतने सारे परंपरा हो और यही हमारी भारतीय संस्कृति की खासियत है। हमारी केरल का भी एक अलग ही परंपरा है। हमारी इसी परंपरा से हमारी धर्म के विश्वास जुड़े हुए है। पर इस आधुनिक समाज में हमारी भारतीय संस्कार कही खो ~~भ~~ रहा है और साथ में हमारी परंपरा भी। पर इस सच को हम टाल नही सकते कि अगर कोई भी परंपरा या आचार, अच्छाई और सच्चाई के खिलाफ हो तो उसे बदलना बहुत ज़रूरी है। लेकिन सच तो यह है कि परंपरा तभी गलत होता है जब हमारे आचार और विश्वास गलत हो। इसीलिए हमारे हर परंपराओं को

भूलना सही नही है।

* <u>इस आधुनिक समाज में परंपरा के नाम पर होनेवाला संघर्ष</u>

आज हमारी केरल, स्त्री-पुरुष की एकता और सालों से चली आ रही परंपरा के बीच फस गया है। मंदिर में स्त्री-प्रवेशन से लेकर हमारी केरल में जो समस्या हो रहा है वह इस बात का सबूत है कि आधुनिकता और परंपरा के बीच टकराहट हो रहा है। एक तरफ ऐसे लोग है जिनके सोच बहुत आधुनिक है कि वह इन आचारों को मानने को तैयार नही है, और सदीयों से चली आ रही इस परंपरा को, बदलने में लगे हुए है और दूसरी तरफ ऐसे लोग है जिन के लिए परंपरा इतना मायना रखता है कि वह कानून के कहने पर भी उसे बदलने से साफ इन्कार करते है। परंपरा के नाम पर हमारे केरल एक संघर्ष-भूमि बन गई है। यह लोगों की आधुनिकता ही कह रही है

है कि जो परंपरा स्त्री-पुरुष की एकता और स्त्रीयों के मौलिक अधिकार के खिलाफ है उसे बदलना है और सर्वोच्च न्यायालय ने भी शायद इसी मानदंड से ऐसे फैसले लिया है। लेकिन विश्वासियों के लिए भी, यह स्वीकार्य नही होगा कि उनके पौराणिक परंपरा को ऐसे अचानक बदल दे क्यों कि धर्म उनके जसबातों से जुड़ी है। पर अंत मे हम इतना जरूर कह सकते है कि परंपरा और आधुनिकता के बीच हो की टकराहट ने हमारे केरल मे अशांती और असहीष्णुता का माहौल बढ़ा दिया है।

सिर्फ यही समस्या ही नही, आज के नई-पीढ़ी भी उतनी आसानी से परंपरा को नही मानते है। आज के युवा-पीढ़ी भी इतने आधुनिक होकर सोचते है कि उन्हे हर विश्वास और परंपरा के पीछे की युक्ति या कारण जानना है, वर्ना वह उसे मानते नही है।

* क्या चुने हम ? आधुनिकता या परंपरा.....

यह लोगों की सोच पर निर्भर रहती है कि वह क्या चुने। आधुनिकता के साथ ~~साथ~~ सोचना हमेशा गलत नही होता और परंपरा का अपमान करना भी सही नही होता। हमें सारे पुराने सोच को मिटाकर आधुनिक बनना चाहिए पर हमारे परंपरा को 'पुरानी सोच' समझकर भूलना भी नही चाहिए। अगर परंपरा बनाई गई है तो उसके पीछे एक कारण भी होगा, हमारे करत मे भी लोगों के पास कई सारे कारण है अपनी इस परंपरा को बनाए रखने के लिए। और भ शायद इसीलिए ही वह कानून के भी खिलाफ जाकर संघर्ष कर रहे है। आधुनिकता और परंपरा के बीच के इस टकराहट का फायदा उठाने के लिए यहा कई राजनेता कोशिश कर रहे है और इससे मामला बिगडता जा

रहा है। अब पता नही कब इस संघर्ष की आग बुझेगा, पर इस टकराहट में, धर्म के नाम पर समाज में अशांती फैल गई है। अब समय ही बताएगा कि यहाँ परंपरा का संरक्षण होगा या नियम का पालन, आनेवाले ज़माने में आधुनिकता की जीत होगी या परंपरा की जीत...

६ समाज की भलाई ; हमारा सबसे बड़ा धर्म

आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष होता रहेगा। आज के नई-पीढी भी इसी समाज से बहुत कुछ सीखते है इसीलिए इस बात की संभावना भी है कि शायद आनेवाले पीढ़ी की अपनी आधुनिकता से हम इस पुराने परंपरा के तरफ उँगली उठाना भी शुरु कर दे। पर इतना समझना बहुत ज़रूरी है कि समाज की भलाई से बढ़कर हमारे लिए और कुछ नही होना चाहिए। हमें एक ऐसा ज़माना नही चाहिए जहाँ आधुनिकता और परंपरा के बीच

~~इतन~~ समस्याए हो, मगर ऐसे ज़माने का निर्माण करना है जहाँ हम अच्छे परंपराओं का पालन भी करे और आधुनिकता के साथ समाज में होनेवाले दूसरे बुराईयों के खिलाफ खड़े हो। ऐसा एक सपना पूरा होना है तो लोगों के मनोभाव ही बदलना है

उपसंहार

आधुनिकता की सोच हमारे दिमाग से और परंपरा दिल से जुड़ा है। हमे अपना दिल और दिमाग, दोनों ज़रूरी है वैसे ही हमे आधुनिकता और दिमाग, दोनों ज़रूरी है, मगर जब इन दोनों के बीच परंपरा भी ज़रूरी है, मगर जब इन दोनों के बीच टकराहट होगी, तो समस्याए और अशांती बढ़ेगी। हमें हमारी समाज मे टकराहट या संघर्ष नही, शांती और एकता की ज़रूरत है इसीलिए हमें मिलकर समाज की और संस्कार की भलाई करना है।

हमें सही सोचना है, तभी सच जीतेगा।